Nai Dunia newspaper gives special coverage on Bamboo Polyhouse constructed under FSPF project in Sodpur village of Nalchha block of Dhar district. This is big achievement of this demonstration project. It will help to replicate this type of innovative activities in other areas. District administration also appreciates this work.

नईदुनिया

धार

राजगढ़-बदनावर-कुक्षी-मनावर-गंधवानी

इंदौर, गुरुवार 19 जनवरी 2017

6 लाख की बजाय 60 हजार में बनता है बांबू पॉलीहाउस

गरीब किसानों के सपने पूरा कर रहा बांस का पॉलीहाउस

क्यों लाए यह कॉन्सेप्ट ...

- गरीब लोगों को इस तरह की सुविधा नहीं मिलने से वे सब्जी उत्पादन में पीछे रह रहे थे।
- नाबार्ड देश का ग्रामीण विकास बैंक का सबसे बड़ा बैंक है।
- इस बैंक के प्रयोग सफल रहने पर देश के हजारों गरीब किसानों को मिल सकता है बैंक से लोन और सस्ते में पॉलीहाउस।
- गरीब व छोटे किसानों को वैकल्पिक आजीविका से जोड़ने का प्रयास।

पॉलीहाउस में मनीराम ने टमाटर लगा रखे हैं।

ये है लाभ

- इस सब में पर्यावरण को भी लाभ है।
- पॉलीहाउस में की जाने वाली खेती में कीटनाशक व अन्य दवाइयों का छिड़काव नहीं करना होता है।
- तापमान नियंत्रित करके गैर मौसम में भी सब्जियों का उत्पादन लिया जा सकता है।
- कम पानी और मौसम से भी लड़ने की इसमें क्षमता होती है।
- आजीविका के लिए छोटे से हिस्से में इस तरह का प्रयोग काफी महत्वपूर्ण है।

धार। प्रेमविजय पाटिल

बांस व जुगत से 10 प्रतिशत लागत में हो गया काम

नालछा विकासखंड के ग्राम सोड़पुर के महज दो या तीन बीघा जमीन के मालिक गरीब व आदिवासी किसान अब अपने यहां पर पॉलीहाउस बनाने का सपना देखने लगे हैं। बड़े और सक्षम किसानों के यहां पर जो पॉलीहाउस 6 लाख रुपए में तैयार हो रहा है। वहीं बांस के माध्यम से केवल 60 हजार रुपए में बनकर यह तैयार हो रहा है। किसान मनीराम टमाटर से लेकर अन्य कई सब्जियों का उत्पादन लेकर मुनाफा कमा रहा है। यही वजह है कि बांबू पॉलीहाउस अब सोड़पुर में और भी बनाए जा रहे हैं। नाबार्ड द्वारा किए गए इस नवाचार के सफल होने पर इसे देशभर में एक मॉडल के तौर पर दिखाया जाएगा।

नालछा विकासखंड का ग्राम सोड़पुर वैसे भी सब्जी उत्पादन के मामले में महत्वपूर्ण है। सब्जी के लिए फेमस इस गांव में सभी किसान आदिवासी और गरीब वर्ग से हैं। ऐसे में ये लोग सब्जी उत्पादन के लिए पॉलीहाउस की कल्पना भी नहीं कर सकते। ऐसे में नाबार्ड के नवाचार के तहत यह प्रयोग किया गया और अब उसके नतीजे सकारात्मक आए हैं।

छोटे किसान अपने छोटे खेतों में इस तरह के पॉलीहाउस बनाकर उत्पादन ले रहे हैं।

मनीराम सब्जी विक्रेता बना

मनीराम भेरू नामक युवक के लिए तो खेती के लिए एक नई क्रांति के समान काम हो गया है। मैदानी स्तर पर जब सोड़पुर को देखते हैं तो पथरीली जमीन है, जहां सामान्य खेती करना भी मुश्किल है। इस हालात में वहां पर 6 लाख रुपए खर्च करके एक छोटा सा पॉलीहाउस भी बनाना संभव नहीं है। दरअसल नाबार्ड यानी राष्ट्रीय ग्रामीण विकास बैंक ने अपने नवाचार के तहत यहां पर कार्ड नामक एनजीओ को इस तरह का प्रयोग करने के लिए अवसर दिया। इसमें मनीराम के खेत पर 1 हजार 260 वर्ग फुट पर बांस के माध्यम से पॉलीहाउस बनाने की गतिविधि शुरू हुई। इसके लिए मनीराम को जहां आर्थिक मदद मिली, वहीं उसने जी-तोड़ मेहनत भी की। इसका परिणाम रहा कि अगस्त में महज कुछ दिन में 60 हजार रुपए में तकनीकी रूप से सक्षम पॉलीहाउस बनकर तैयार हो गया। सबसे बड़ी चुनौती यह थी कि बांस से बना यह पॉलीहाउस आंधी-तूफान झेल पाएगा या नहीं। अगस्त माह के बाद मौसम के उतार-चढ़ाव झेलने के बाद आज स्थिति बदली हुई है। मनीराम ने नईदुनिया को बताया कि अभी तक वह 12 हजार रुपए से अधिक के टमाटर बेच चुका है। जबकि दूसरे सीजन के लिए अभी टमाटर लगा रखे हैं। आगामी दिनों में सब्जी के लिए रोपे तैयार करके उसे बेचने की तैयारी है। मनीराम को नाबार्ड से सहायता मिली थी तो और भी लोगों ने श्रमदान करके इसमें आगे आने की पहल की। इसका परिणाम है कि सोड़पुर में बांस के और भी पॉलीहाउस तैयार हो रहे हैं। नाबार्ड का यह प्रयोग उनके अधिकारियों द्वारा सफल बताया जा रहा है।

पूरा होगा सपना

गरीब लोगों का पॉलीहाउस का सपना कम लागत में पूरा करने के लिए प्रयास किया गया है। इसमें मनीराम जैसे किसानों की भी महत्वपूर्ण भूमिका है। नाबार्ड ने इस दिशा में यह कदम उठाया है, जो कि अन्य किसानों के लिए भी अनुकरणीय हो रहा है।

-अबुल हसन चौधरी, प्रोजेक्ट इंचार्ज, कार्ड

अनुकरणीय पहल

आदिवासी अंचल में सस्ते में बांबू पॉलीहाउस बनाने का प्रयोग हुआ है तो यह निश्चित रूप से अनुकरणीय है, क्योंकि यह लाखों रुपए में बनकर तैयार होता है। सब्जी उत्पादन आदि के लिए यह पॉलीहाउस एक विशेष तकनीक साबित होती है।

-डॉ. केएस किराड़, प्रभारी, कृषि विज्ञान केंद्र, धार

मकसद गरीबों का लाभ

मंडला क्षेत्र में भी बांस के पॉलीहाउस बने हैं। आदिवासी बाहुल्य जिले में नाबार्ड ने इस तरह का प्रयोग किया है। इसके पीछे मकसद यह था कि गरीब लोगों को भी लाभ मिले। हमारा यह प्रयोग सफल रहा है। आगामी भविष्य में हम यह प्रयास करेंगे कि बैंकों के माध्यम से छोटे किसानों को इसका लाभ मिले। बैंक ऋण देना शुरू करें।

-अनिल कुमार सोनी, वरिष्ठ प्रबंधक, नाबार्ड